साबुन-पानी ज़िंदाबाद!

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

: अशोक राजपथ, पटना, (बिहार)

ISBN : 978-93-5000-554-5

मूल्य : ₹ 30

संस्करण : 2011

लेखक : कोर्नेई चुकोव्स्की

अनुवादक : मदनलाल 'मधु'

चित्रकार : अ. कानेव्स्की

Sabun-Pani Zindabad!

भाग चला मेरा कम्बल।
वह बिस्तर से गिरा उछल।।
तकिया भी कूदा झटपट।
मेढक-सा फुदका नटखट।।

भागी तब मेरी चादर।
सिर पर अपने पग धरकर।।
मैं बत्ती की ओर बढ़ा।
वह भी भागी मुझे चिढ़ा।।

पुस्तक जब लेनी चाही तो
भाग चली वह भी शैतान।
छिपी पलंग के नीचे जा कर
कौतुक देख हुआ हैरान।।
पी लूँ चाय, उठाये प्याला
समोवार की ओर बढ़ा।
वह तोंदल भी मुझे देखकर
भागा अपनी नाक चढ़ा।।
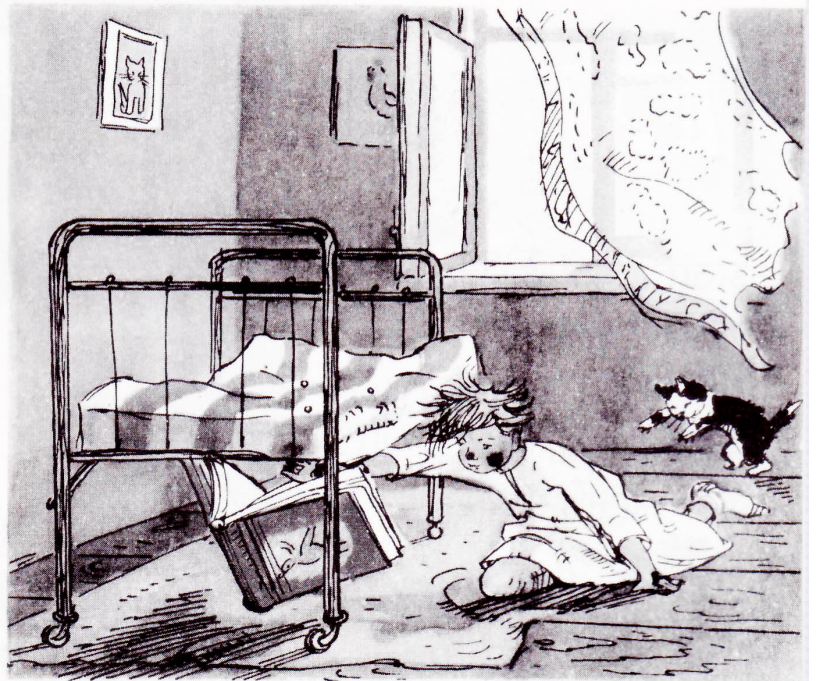
यह सब क्या है?
क्या क़िस्सा है?
यह भगदड़
यह कैसी होड़?

सब कुछ घूम रहा चक्कर में
भाग रहे सब ताबड़-तोड़?
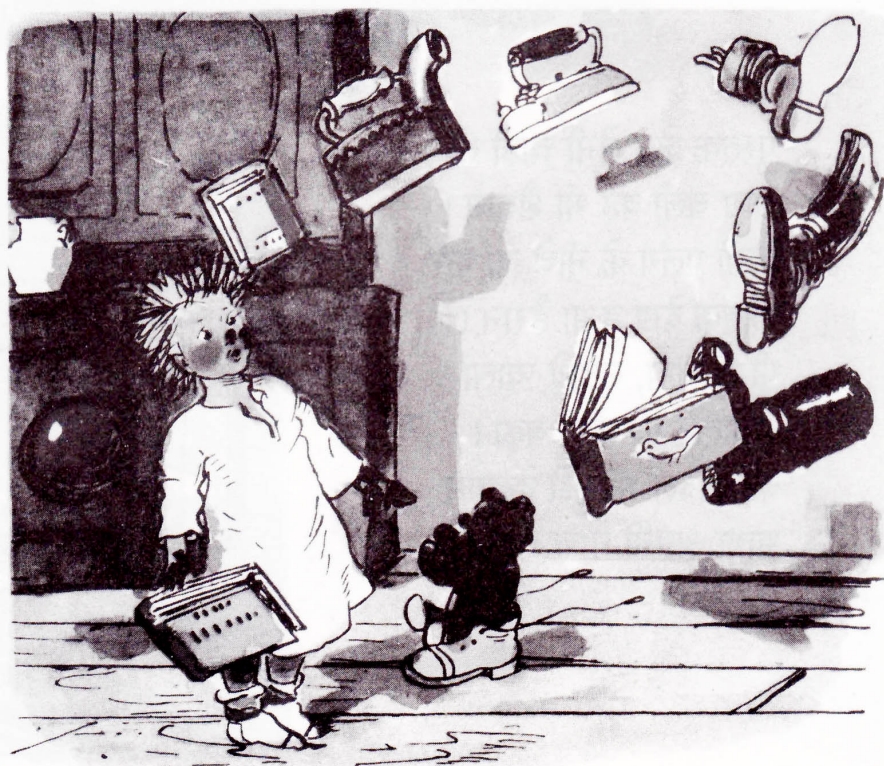
इस्तरियाँ जूतों के पीछे,
जूते भागें आँखें मीचे।
सभी खिलौने ऊपर-नीचे।।
पेटी कहीं, किताबें घूमें।
जैसे सभी नशे में झूमें।।
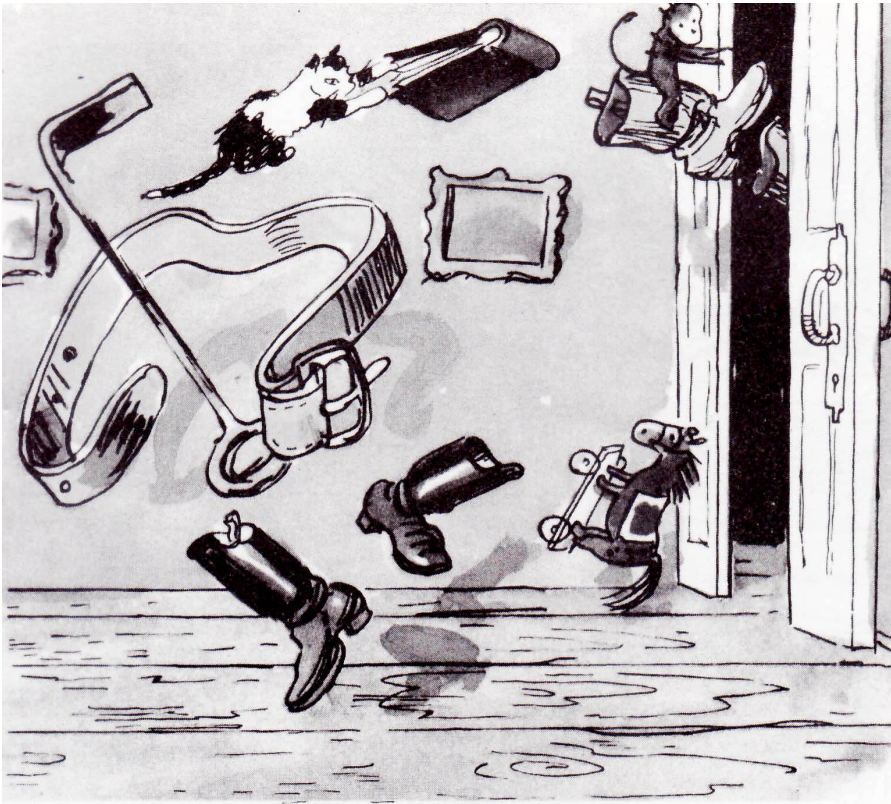
माँ के सोने के कमरे से
तभी चिलमची भागी आई।
लँगड़ी, टेढ़ी टाँगों वाली,
उसने आकर डाँट बताई।
"अरे दुष्ट, ओ गन्दे लड़के
शर्म न तुझको बिल्कुल आती।"
तन पर ढेरों मैल चढ़ाये
तुम तो हो सूअर के साथी।।
दर्पण में सूरत तो देखो
गर्दन हुई मैल से काली।
जहाँ-तहाँ स्याही के धब्बे
देह कि जैसे गन्दी नाली।।

हाथ कि दोनों काले-काले।
गन्दे-मन्दे, कालिख वाले।।
इसीलिये तो उन से डर कर।
भाग गया पतलून बिदक कर।।
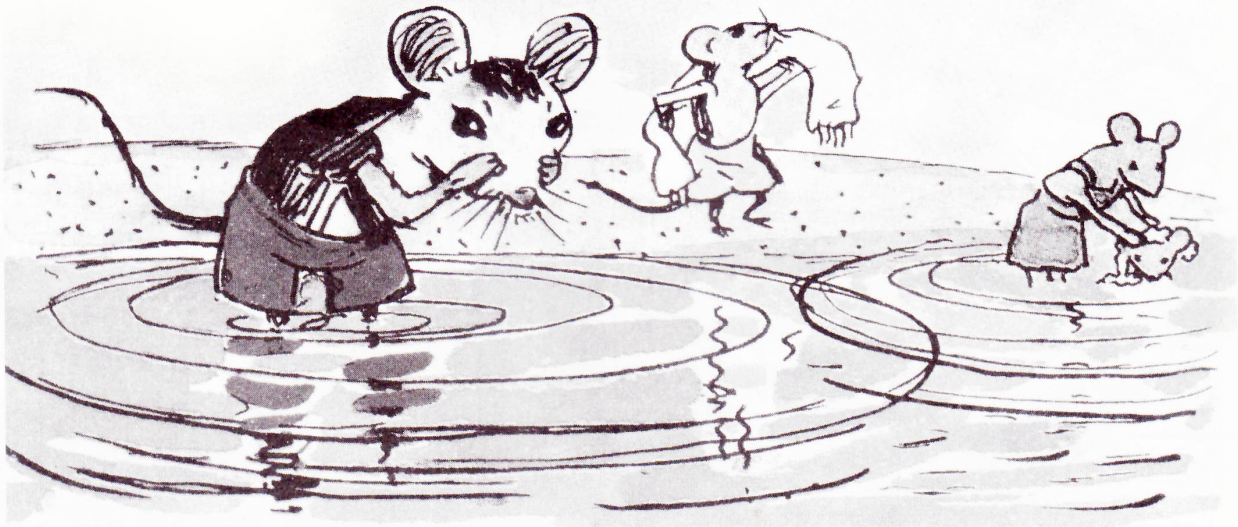
पौ फटते चूहों के बच्चे
सभी हाथ-मुँह अपने धोते।
बिल्ली, बत्तख़, चिड़िया, तोते,
सभी लगायें जल में ग़ोते।।
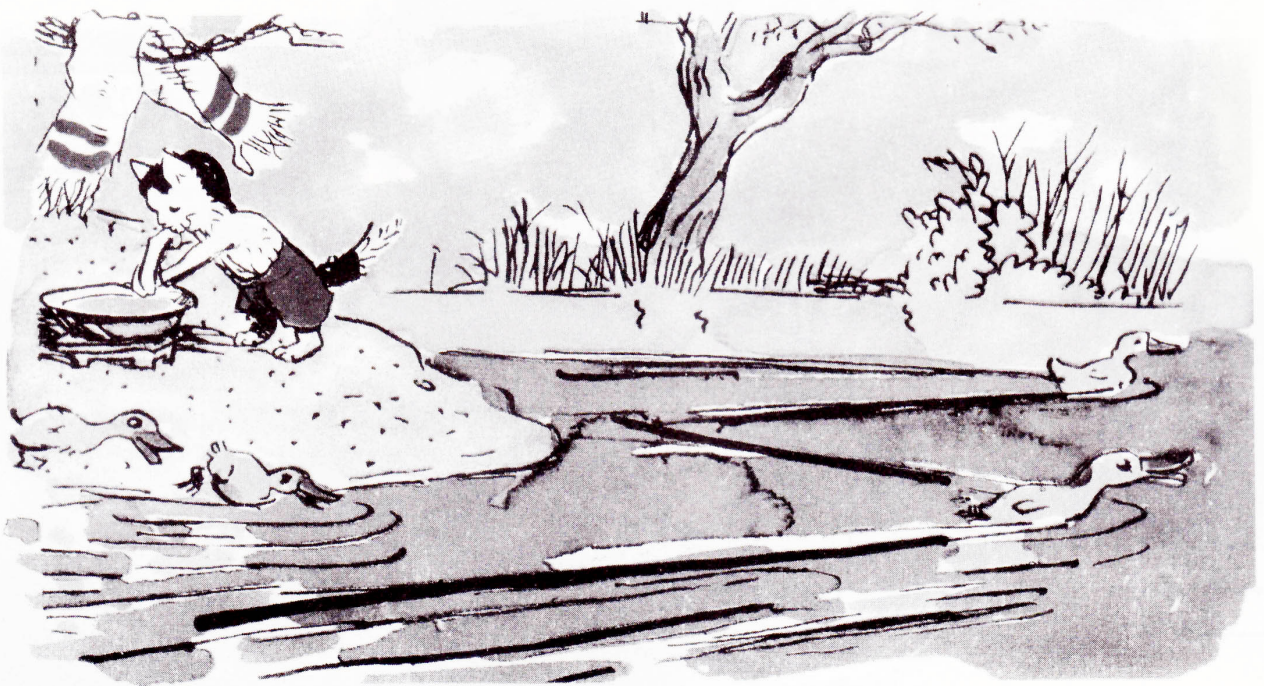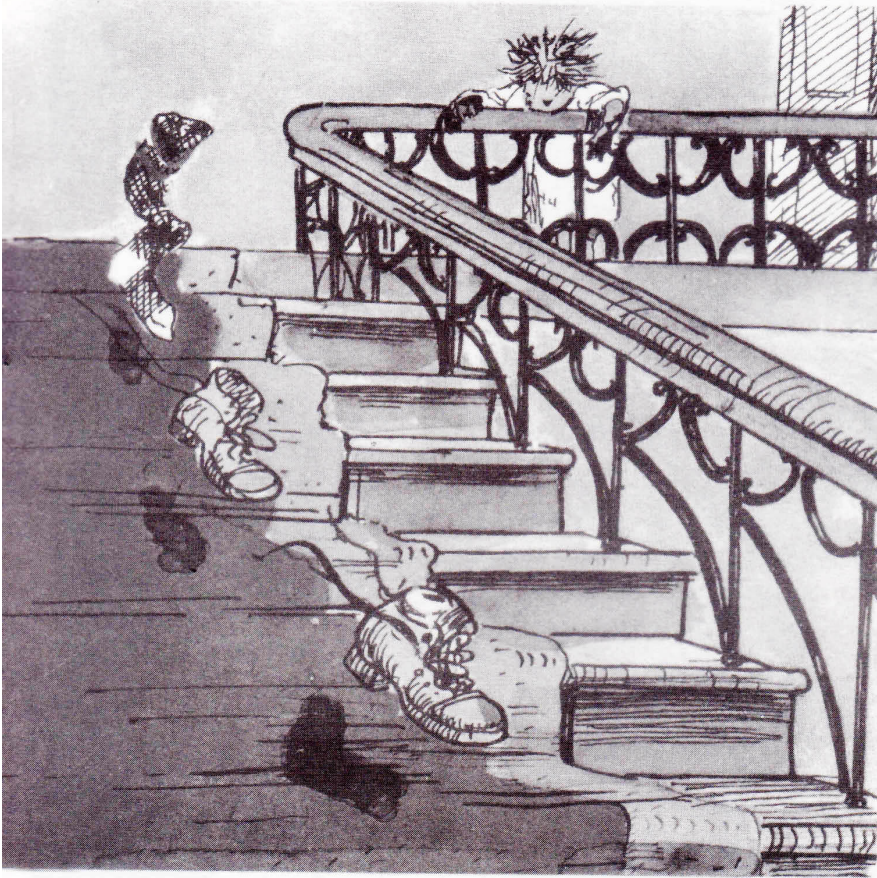
नहीं हाथ-मुँह जिसने धोया
ऐसे तुम ही एक अभागे।
इसीलिये जुराब औ' जूते
तुम से दूर-दूर हैं भागे।।
मैं तो सब से बड़ी चिलमची
अन्य सभी की मैं सरदार।
'धो लो, धो लो'-नाम है मेरा
मेरे बल का वार न पार।।

हुक्म सुनें, चिलमचियाँ भागें
स्पंज इशारा मेरा मानें।
मेरे पैर पटकते ही वे
आयें, आकर सीना तानें।।
पैर पटक तुझ को धमकायें।
डाँटें-डपटें, शोर मचायें।।
तुझको, गन्दे सिर वाले को
बदबू वाले, परनाले को
पकड़ नदी पर वे ले जायें।
वहाँ तुझे ग़ोते लगवायें।।
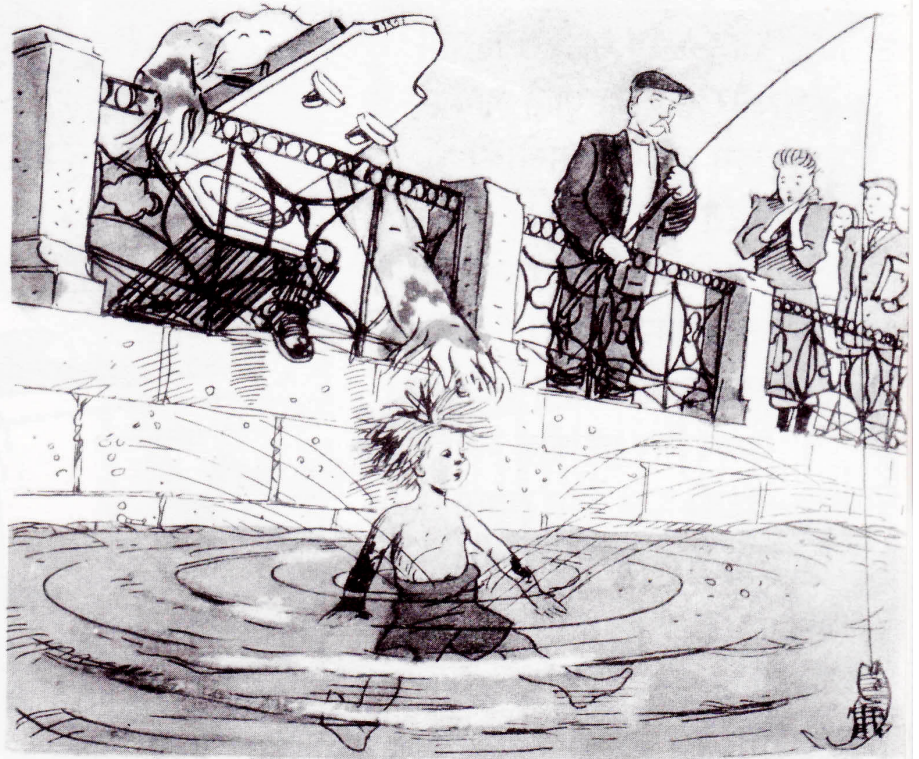
तांबे के टब पर तब उसने
बड़े ज़ोर से मुक्का मारा।
और कहा कुछ 'कारा-बारा'।।
उसी समय ब्रश भागे आये।
मेढक-से टर्राते आये।।
रगड़-रगड़ मुझको नहलायें
और साथ यह गाते जायें-
"हम इस गन्दे-मन्दे को
करते साफ़-साफ़।
तन निखरे, मुँह चमके इसका
करते साफ़-साफ़।।"
साबुन की टिकिया झट आई।
उसने सिर पर धौल जमाई।।
चुटकी काटे, फेन सताये।
सुने न मेरी हाये-वाये।।
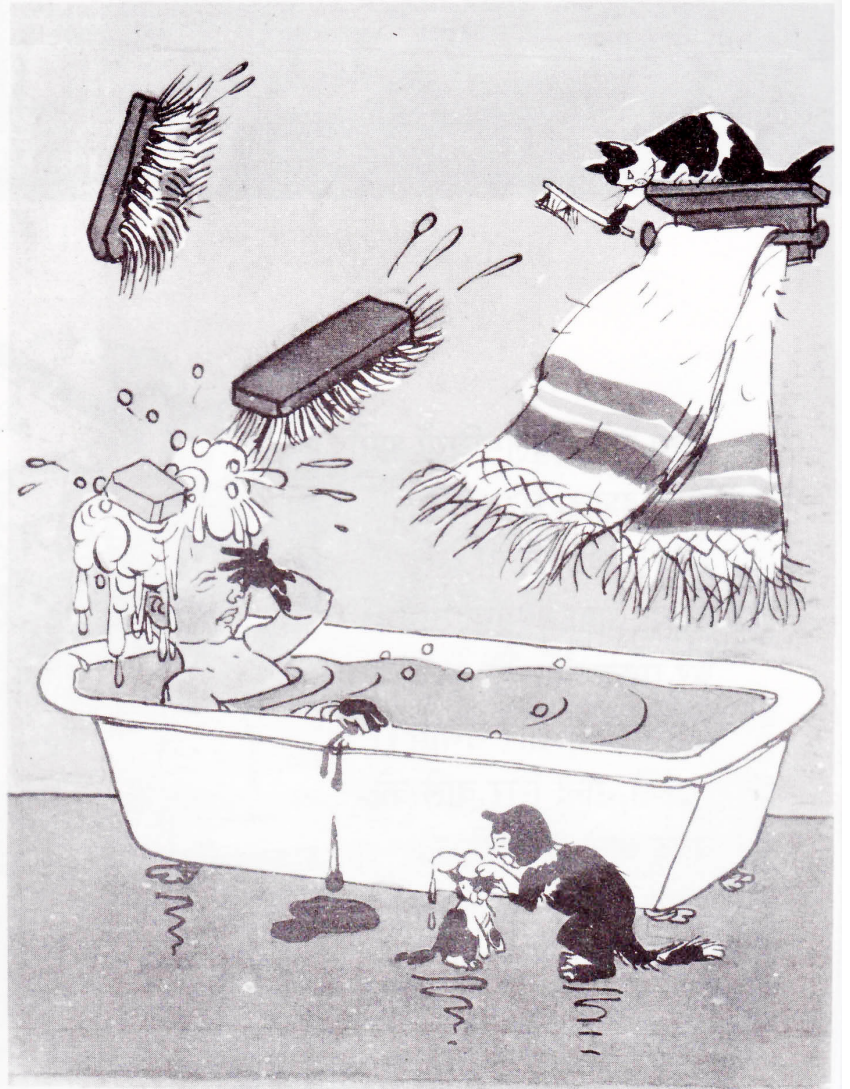
वह पागल, स्पंज मुस्टंडा।
मुझे डराये, जैसे डंडा।।

उससे डर कर भाग चला।
पर वह ज़ालिम नहीं टला।।
मैं दायें, तो वह दायें।
मैं बायें, तो वह बायें।।
लाँघ गया मैं बाड़ मगर।
झपटा वह फिर भी मुझ पर।।

उसी समय घड़ियाल मित्र
वह मेरा प्यारा-प्यारा।
बच्चों के संग पड़ा दिखाई
उसने कष्ट निबारा।।
उसने झट स्पंज को निगला।
वह हलवे-सा मुँह में पिघला।।
फिर वह मुझे देख चिल्लाया।
पैर पटकता भागा आया।।

"जाओ, फ़ौरन, जाओ घर।
वह बोला!
मुँह को धोओ मल मल कर।।
वह बोला!
वरना अक़्ल सिखाऊँगा।
वह बोला!
पीटूँगा, खा जाऊँगा।।
वह बोला!"
भाग चला मैं तब सरपट।
वापस आया घर झटपट।।
मल मल साबुन
मल मल साबुन
बहुत देर तन साफ़ किया।

धब्बे धोये
स्याही धोयी
मुँह का मैल उतार दिया।।
अब पतलून भागता आया।
"पहनो मुझको," वह चिल्लाया।।
तभी समोसा बोला आकर।
"मुँह में रख लो, मुझे उठाकर।।"
नारंगी भी दौड़ी आई।
सीधे मुँह के बीच समाई।।
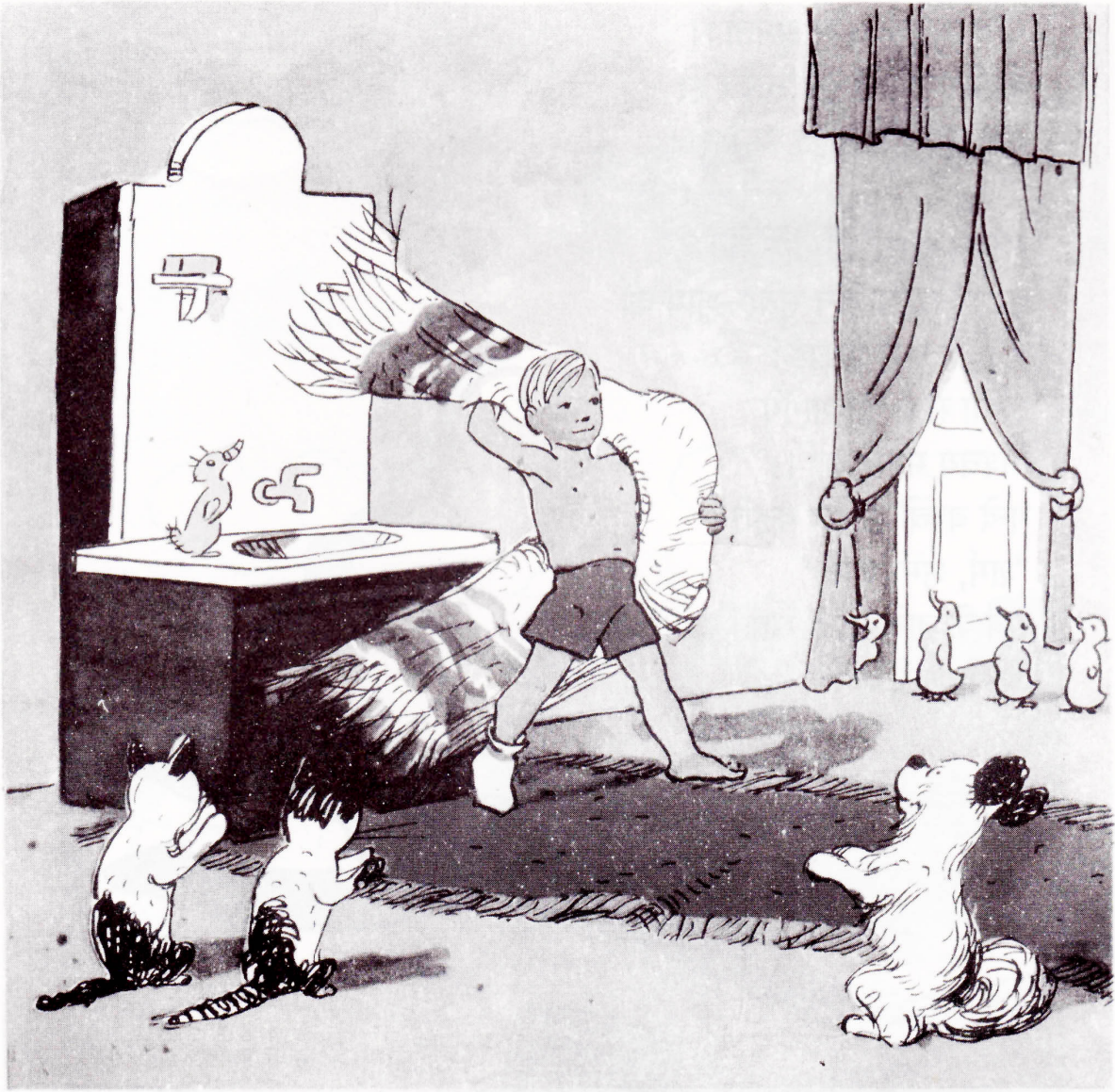
लौटी अब पुस्तक भी मेरी
कापी भी आई वापस।
गणित, व्याकरण झूमे खुश हो
नाच उठे दोनों बरबस।।

इसी समय वह बड़ी चिलमची
अन्य सभी की जो सरदार।
'धो लो, धो लो' नाम है जिसका
जिसके बल का वार न पार।।
भागी आई मुझे चूमती।

नाच नाचती और झूमती ।।
बोली–"तुम कितने सुन्दर हो
अब तुम मुझे बहुत प्यारे हो।

सबकी आँखों के तारे हो ।।"
हर दिन, हर दिन सुबह–शाम को
तन की करो सफ़ाई।
वरना सभी दूर भागेंगे
निश्चय मानो भाई ।।
गन्दे बच्चों से सब कहते :
"शर्म, शर्म, शर्म।"
सब के ताने–बोली सहते
"शर्म, शर्म, शर्म ।।"
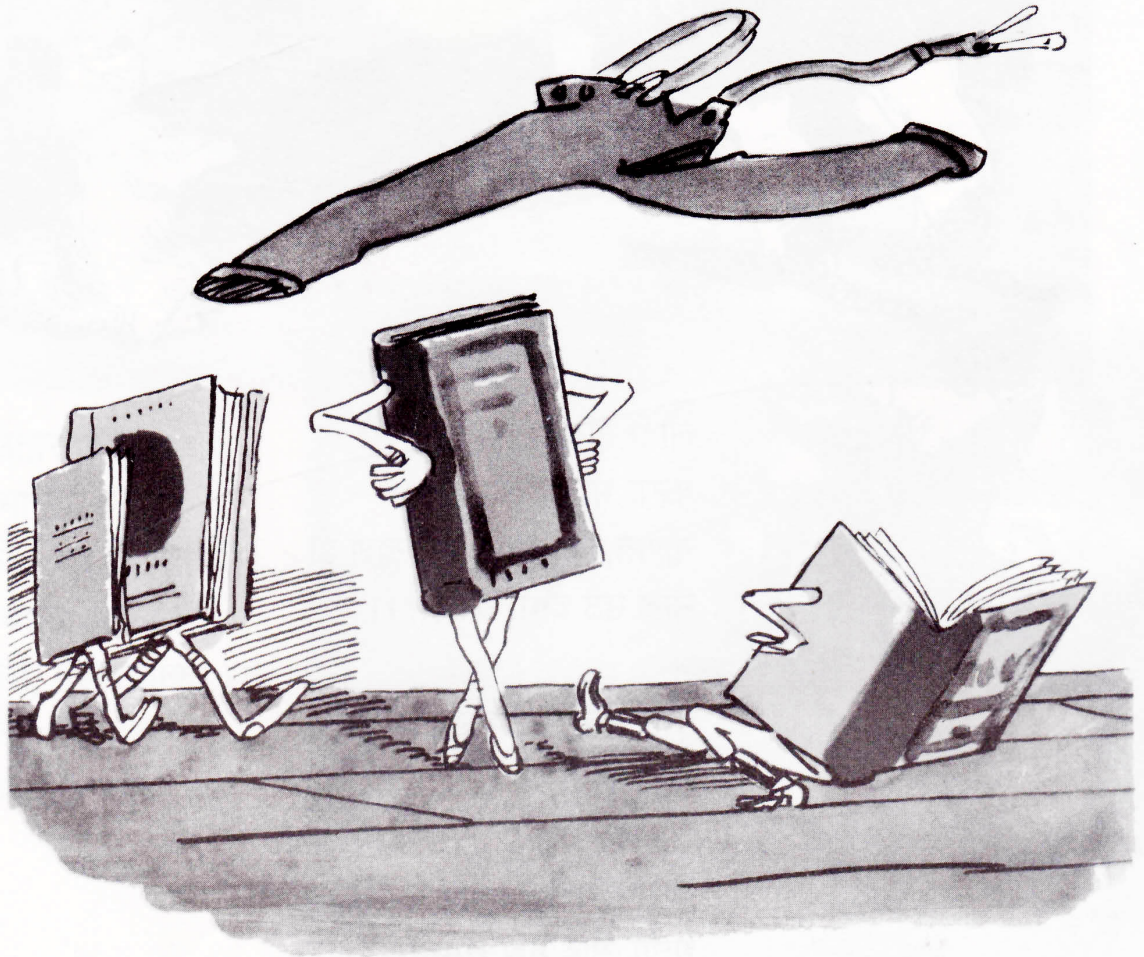
खुशबू वाला प्यारा-प्यारा
साबुन ज़िन्दाबाद!
फूला-फूला नर्म तौलिया
वह भी ज़िन्दाबाद!
ज़िन्दाबाद रहे दाँतों का बढ़िया
मंजन।
ज़िन्दाबाद रहे आँखों का बढ़िया अंजन।।

तालाबों में, नद-नदियों में
आओ, चलें नहायें।

सागर की लहरों से खेलें
तैरें, मौज मनायें।।

नल-टोंटी के नीचे बैठें
घर में स्नान करें।
पानी ज़िन्दाबाद कि उससे
तन का ताप हरें।।